ISSN 2454-5554
An International Peer Reviewed & Referred
SJIF 2017 : 4.93
INTERNATIONAL JOURNAL
OF EDUCATIONAL RESEARCH STUDIES

''शिक्षक सशक्तिकरण एवं गुणात्मक सुधार'' – एक अध्ययन

Brijesh Kumar Sharma, Ph. D.

Principal, Ch. Natthu Singh Yadav P G College, Dihuli, Mainpuri

शोध सार

शिक्षक वर्ग; समाज का मार्गदर्शक तथा अग्रवर्ती वर्ग है। इस वर्ग को और अधिक सशक्त बनाने के लिए mPp orueku rFkk vU; vudk mPp Lrjh; lfo/kk, inku dh x;h gA lu 1985 e ekuo lalk/ku fodkl e=ky; u महाविद्यालयी शिक्षकों को सशक्त बनाने के लिए एक पृथक प्रकोष्ठ की स्थापना की है जो महाविद्यालयी शिक्षकों की 'kf{kd xfrfof/k;k dk lpk: lpkfyr djrh g[1] यथा– ओरियेन्टेशन कोर्स, रिफ्रेशर कोर्स, वर्कशॉप, शोध संगोष्ठियाँ, ऐब्रॉड एजुकेशन, पोस्ट डोक्टोरेल फैलोशिप, रिसर्च प्रोजेक्ट्स, (माइनर एण्ड मेजर), फाइनेशियल ऐसिस्टेन्स आदि। निःसन्देह; ''शिक्षक सशक्तिकरण'' एक नवीन प्रत्यय/अवधारणा है[2] ftldk vk्शय एक शिक्षक को जो कि समाज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण इकाई एवं समाज का आइना है; को शैक्षिक परिप्रेक्ष्यों में सशक्त बनाते हैं शिक्षक को सशक्त बनाने की प्रक्रिया ही सामान्य अर्थ में शिक्षक सशक्तिकरण है। इस रूप में शिक्षक सशक्तिकरण एक शैक्षणिक सुधार की एक iक्रिया है। विद्वानों का मत है कि सशक्तिकरण की प्रक्रिया में ''शिक्षा तथा रोजगार की दशाएं'' बेहतर भूमिकाएं अदा djr gA

पारिभाषिक शब्द: *शिक्षक वर्ग, शैक्षिक उन्नयन, शिक्षक सशक्तिकरण, शिक्षक अधिकार।*

विवेचना एंव शोध परिलब्धियॉः

cMgky[3] (2007) नामक शिक्षाशास्त्री ने भी लिखा है कि एक शिक्षक को सशक्त बनाने में ''शैक्षिक उन्नयन'' के प्रयासों की महती आवश्यकता है क्योंकि शिक्षा ही सर्वाधिक संस्था है और साधन भी। आगे आपने लिखा है कि शिक्षा उन्नयन ही वह सशक्त साधन है जिसने शिक्षक के साथ–साथ शिक्षा व्यवस्थk dk Hkh ln< fLFkfr inku dh g yfdu 'ku% 'ku%A vkj] ;g Hkh Lor% fl) g fd fdlh Hkh lUnHk में गुणात्मक सुधार कभी भी यकायक न होकर शनैः शनैः ही होता है। शोध अध्येता ने ''शिक्षक के सशक्तिकरण में गुणात्मक सुधार'' का अध्ययन करने के लिए पाठ्य iLrdk] n"; J0; lkexh] प्रोजेक्टर, शोध संगोष्ठियाँ, रिफ्रेशर, ओरियेन्टेशन, स्वस्थ्य शैक्षिक पर्यावरण, शिक्षा सम्बन्धी अन्य xfrfof/k;k vkfn dk ie[k mRrjnk;h dkjd ekur g, vkuHkfod rF;k d vk/kkj ij fu"d"k fudkyu dk ,d y?k i;kl ^^ekbØk bfEijhdy LVMh** }kjk fd;k gA ftld fy, fuEu nk ifjdYiuk, fufer dh x;h g&

¼1½ शिक्षक के सशक्तिकरण में गुणात्मक सुधार हेतु उच्च स्तरीय शैक्षिक गतिविधियाँ सकारात्मक Hkfedk fuHkkrh gA

¼2½ शिक्षक सशक्तिकरण में नित नई पाठ्य पुस्तकें, दृश्य श्रव्य सामग्री तथा स्वस्Fk 'k{kf.kd पर्यावरण के अतिरिक्त ''शिक्षक अधिकार'' उत्प्रेरक का कार्य करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध प्रपत्र का मौलिक उद्देश्य ''शिक्षक सशक्तिकरण में गुणात्मक सुधार'' कैसे सम्भव है, का अध्ययन करना है; जब कि पूरक उद्देश्य उक्त सन्दर्भ में सैद्धान्तिक rFkk 0;kogkfjd l>ko iLrqr djuk gA

'kks/k&ikfof/k ¼i)fr;kW o ifof/k;kW½ %

bl ^l{e vkuHkfod v/;;u* dk lEikfnr djus d fy, ^'kks/k ikfof/k* fuEu idkj viuk;h x;h g&

¼d½ न्यादर्श चयन : आगरा नगर स्थित बी-,M- कालेजों से कुल 50 शिक्षकों का चयन संयाx न्यादर्श की लाटरी पद्धति से किया गया जिसमें 27 शिक्षक तथा 23 शिक्षिकाएं चयनित हुई।

¼[k½ v/;;u i)fr d :i e ^lk{kkRdkj vuqlph* viuk;h x;h ftlesa iR;{k lk{kkRdkj lEiUu dj ikFkfed rF; ldfyr fd, x, g rFkk vlgHkkxh voykdu rduhd dk Hkh lgkjk fy;k x;kA

¼x½ गुणात्मक तथ्यों का संकलन करने के लिए मात्र 5 शिक्षकों (2 शिक्षक, 3 शिक्षिकाएं) की ''केस LVMh t** Hkh dh x;h gA

शोध अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्त तथा प्राक्कल्पनाओं की सत्यता व सार्थकता की जाँच करने d fy, lk[;dh; ijh{k.kkW lg&lEcU/k x.kkd (r) rFkk vlxr ¼vkdfLedrk½ x.kkd (Q) dk ifjdyu(fd;k x;k gA

प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण एवं सामान्यीकरण :

rkfydk u- (1) : न्यादर्शों की वैयक्तिक पृष्ठभूमि

¼1½ vk; ¼o"kk e½	25 o"k l de	25&35	35&45	45 l Åij
	03¼06-00½	20¼40-00½	17¼34-00½	10¼20-00½
¼2½ fyx&Hkn	i :"k	efgyk,	&&	&&
	27¼54-00½	23¼46-00½		
¼3½ 'kf{kd ;kX;rk,	vgrk, i.k	vgrk, vi.k	&&	&&
	20¼40-00½	30¼60-00½		
¼4½ oru ¼ekfld :- e½	20000 l de	i.k orueku	&&	&&
	32¼64-00½	18¼36-00½		

प्रस्तुत तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययनार्थ चयनित कुल 50 न्यादर्शों में से आयु सापेक्ष 6 प्रतिशत न्यादर्श 25 वर्ष से कम, 40 प्रतिशत न्यादर्श 25 से 35 वर्ष, 34 प्रतिशत न्यादर्श 35 से 45 वर्ष तथा शेष 20 प्रतिशत न्यादर्श 45 वर्ष तथा इससे भी अधिक आयु के चुने गए। लिंग भेदानुसार इन न्यादर्शों में 54 प्रतिशत शिक्षक (पुरूष) तथा 46 प्रतिशत शिक्षिकाएं (महिलाएं) चुनी गयी, शैक्षिक अर्हताओं की दृष्टि से 40 प्रतिशत अर्ह तथा 60 प्रतिशत अ–अर्ह चुने गए जिनमें से 64 प्रतिशत को

20000 से कम तथा शेष 36 प्रतिशत शिक्षकों को पूर्ण वेतनमान मिलता है। उल्लेखनीय g fd vu ,MM कालेजों/स्ववित्त पोषित कालेजों के शिक्षक कम वेतनमान तथा अपूर्ण अर्हताओं वाले पाए गए हैं। इन शिक्षकों के अध्ययन करने पर ''शिक्षकों ने स्वीकार किया है कि'' शिक्षक के सशक्तिकरण में ''पूर्ण अर्हताएं तथा अधिकार सम्पन्नता'' आवश्यक कारक हैं; जबfd o bu nkuk l ij ¼fojr½ g(vLr सशक्त नहीं हैं।

'kks/k v/;rk u ifjdYiuk u- (1) के सम्बन्ध में सभी 50 न्यादर्शों से प्रश्न किया कि ''क्या शिक्षक सशक्तिकरण में गुणात्मक सुधार हेतु उच्च स्तरीय शैक्षिक गतिविधियाँ सकारात्मक भूमिकाएं fuHkkrh g\ ikIr iR;Rrjk l fu"d"k dh LFkkiuk d fy, vkdfLedrk@vlxr x.kkd (Q) dk ifjdyu fd;k x;k g&

rkfydk u- ¼1½ % vkdfLedrk@vlxr x.kkd (Q) dk ifjdyu

Øe	क्या शिक्षक सशक्तिकरण में गुणात्मक l/kkj gr mPp Lrjh; xfrfof/k;k आवश्यक हैं	न्यादर्शों के vHker @ vkofRr;k		dy ;kx
		i:"k	efgyk,	
1	gk	20_A	10_B	30
2	ugh	07_C	13_D	20
	dy ;kx	27	23	50

$$\text{vlxr@vkdfLedrk x.kkd (Q)} = \frac{AD - BC}{AD + BC}$$

$$= \frac{20 \times 13 - 10 \times 7}{20 \times 13 + 10 \times 7} = \frac{260 - 70}{260 + 70}$$

$$= \frac{190}{330} = 0.5758 \text{ ¼/kukRed eku½}$$

pfd vkdfLedrk x.kkd (Q) dk ifjdYiukRed eku ¼$½0-5758 ikIr gvk g tk ;g fl) djrk है कि (1) शिक्षक सशक्तिकरण में गुणात्मक सुधार के लिए उच्च स्तरीय शैक्षिक गतिविधियाँ अति आवश्यक हैं (2) गुणात्मक सुधार आकस्मिक न होकर शनैः शनैः होता है। अतः हमारी परिकल्पना सत्य ,o lkFkd fसद्ध है। शोध अध्येता ने पुनः पूरक प्रश्न करते हुए सभी 50 सूचनादाताओं से पृथकतः पूछा कि ''शिक्षक सशक्तिकरण में गुणात्मक सुधार हेतु कौन–कौन सी गतिविधियाँ आवश्यक हैं**

lpukndrkvk l ikIr iR;Rrjk l lg&lEcU/k x.kkd (r) dk ifjdyu fd;k x;k&

rkfydk u- ¼2½ % lg lEcU/k x.kkd (r) dk ifjdyu

Øe	क्या शिक्षक सशक्तिकरण में निम्न गतिविधियाँ आवश्यक हैं।	न्यादर्श व vkofRr;k		lg&lEcU/k dh x.kuk			
		शिक्षक	शिक्षिकाएं	R_1	R_2	$d=R_1-R_2$	d^2
¼d½	ugh	&	&	&	&	&	&
¼[k½	gk ¼	23	27	&	&	&	&
	1- fur u;h ikB; iLrd	16	24	3	3	0	0
	2- ikB;Øe lq/kkj	13	17	6	6	0	0
	3- i.k orueku	12	15	7-5	7-5	0	0
	4- n0; J0; lkexh	15	21	4	4	0	0
	5- स्वस्थ्य शैक्षिक पर्यावरण	14	19	5	5	0	0
	6- 'kks/k lxks"B;k@fopkj ep	10	6	9-5	12	¼&½2-5	6-25
	7- fjlp ikstDVl	12	15	7-5	7-5	0	0
	8- पोस्ट डोक्टोरल फेलोशिप	7	10	12	9	3	9
	9- QkbufU l;y ,flLVUl	20	25	2	2	0	0
	10- रिफ्रेशर/ओरियेन्टेशन कोर्सेज	23	27	1	1	0	0
	11- एब्रोड एजूकेशन	9	9	11	10	1	
	12- vf/kdkj vkfn	10	7	9-5	11	¼&½1-5	2-25
	dy;kx	&	&	&	&	&	$\sum d^2=17.50$

(Note : Total number of frequencies is more than 100 percent due to multiple responses)

Lih;j eu dkfVØe vUrj fof/k l lg&lEcU/k x.kkd

$$(r) = 1 - \frac{6\sum d^2}{N(N^2-1)} = 1 - \frac{6 \times 17.50}{12(144-1)} = 1 - \frac{6 \times 17.50}{12 \times 143} = 1 - \frac{105}{1716}$$

$= 1 - 0.06119 = 0.9389$ ¼/kukRed lg&lEcU/k½

pfd lg&lEcU/k dk ifjdyukRed eku ¼$½0-9389 mPp dkfV dk /kukRed ik;k x;k g tk ;g स्पष्ट करता है कि शिक्षक के सशक्तिकरण में उक्त तालिका (3) e fufn"V fofHkUu 'k{kf.kd xfrfof/k;k dh Hkfedk, vge gA vr% gekjh ifjdYiuk ¼2½ Hkh lR; ,o lkFkd g vFkkr fu"d"kr% कहा जा सकता है कि उपरोक्त गतिविधियों द्वारा शिक्षकों के सशक्तिकरण में गुणात्मक सुधार लाया जा ldrk gA 'kks/kk&v/;rk dk l>ko है कि (1) शिक्षकों को सशक्त बनाने में सिद्धान्त तथा व्यवहार में समन्वय किया जाय (2) स्व–वित्त पोषक शिक्षण संस्थाओं को अनुदानित किया जाय (3) सह पाठ्य क्रियाकलाप समयानुसार तथा आवश्यकताओं के अनुरूप कराए जांय।

lUnHk %

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (नई दिल्ली) पत्रिका में प्रकाशित लेख, 1991, पृष्ठ 1

*महाजन संजीव ; शैक्षिक पर्यावरणः एक महती आवश्यकता, प्रकाशित शोध लेख, राष्ट्रीय शोध पत्रिका ''सामाजिक lg;kx** mTtu] 2003] vd 57] i"B 21&27*

वुडहल डब्ल्यू0एच ; कॉलेज एजुकेशन एण्ड कैरियर, कैरियर मैगजीन, दिल्ली, 2007, i"B 9&13